रस

(i) श्रृंगार रस :– प्रेमी-प्रेमिका के मन में कामना रूप रति है। परिपक्व प्रेमी का रति स्थायी भाव जब स्थायीरूप में अनुभाव आस्वादन की योग्यता प्राप्त कर लेता है, तो वहाँ श्रृंगार रस होता है। इसका स्थायी भाव रति है।

प्रेमपूर्ण आलाप, परस्पर देखना, आलिंगन, रोमांच, वार्तालाप, स्पर्श, कटाक्ष तथा मुस्कान आदि अनुभाव होते हैं। उत्सुकता, लज्जा और जड़ता, और स्मृति आदि संचारी भाव आदि हैं। इसके दो भेद होते हैं संयोग और वियोग।

"नील परिधान बीच सुकुमार
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग,
खिला हो ज्यों बिजली का फूल
मेघ वन बीच गुलाबी रंग।" (प्रसाद)

(ii) हास्य रस :–

विकृत वेष-भूषा, वाणी और चेष्टाओं से स्थायी भाव हास का परिपुष्ट रूप हास्य रस कहलाता है। इसमें आश्रय पाठक, दर्शक या श्रोता होते हैं। चपलता, और हर्ष संचारी हैं तथा पढ़ने के पश्चात दर्शकों के खिलखिलाकर हँस पड़ने में अनुभाव हैं जिससे हास्य रस की सृष्टि हो रही है।

"कान पकड़ता हूँ मैं अभी
माफ करो अब हूँ भूला।
एक पाँव में रहे खड़ाऊँ
एक पाँव का मैं लूला।"

(iii) करुण रस — इसका स्थायी भाव शोक है। बन्धु-विनाश, प्रिय वियोग या पराभव आलम्बन तथा विनष्ट प्राणी के सम्बन्धी या दर्शक आश्रय होते हैं। हृदय में भी कभी-कभी तीव्र भावनाओं के कारण

(iv) वीर रस — स्थायी भाव है उत्साह। आलम्बन शत्रु, दीन, याचक, तीर्थ पर्व आदि। इसके मुख्यतः चार भेद हैं — युद्धवीर, धर्मवीर, दानवीर और दयावीर। यहाँ युद्धवीर का उदाहरण / दृष्टान्त है —

"अमर्त्य वीर पुत्र हो
दृढ़ प्रतिज्ञा सोच लो
प्रशस्त पुण्य पंथ है
बढ़े चलो, बढ़े चलो।"

(v) रौद्र रस — जहाँ अपमान, गुरुजनों की निन्दा, विरोधी शत्रु द्वारा छेड़खानी आदि से प्रतिशोध की भावना जागृत होती है वहाँ रौद्र रस होता है। इसका स्थायी भाव क्रोध है।

(vi) भयानक रस — भयप्रद वस्तु को देखने या प्रबल शत्रु के आक्रमण से हृदय में वर्तमान स्थायी भाव भय जब पुष्ट होकर व्यक्त होता है तो उसे भयानक रस कहते हैं।

(vii) बीभत्स रस — घृणित वस्तु को देखने, सुनने से जहाँ जुगुप्सा स्थायी की परिपुष्टि हो वह बीभत्स रस होता है।

(viii) अद्भुत रस — विचित्र वस्तु देखने से उत्पन्न विस्मय स्थायी भाव जब अपने परिपुष्टि में उपस्थित होता है तो वहाँ अद्भुत रस है।